Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

'1084वें की माँ' का कथा-विश्लेषण

मोहन लाल राठौड़

स्वतंत्र शोधार्थी
जैसलमेर, राजस्थान, 345001

महाश्वेता देवी द्वारा लिखा गया उपन्यास '1084वें की माँ', सुजाता नामक स्त्री के प्रसव दर्द से प्रारम्भ होता है और धीरे-धीरे सुजाता के समस्त जीवन वृत्त को विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार प्रस्तुत करता है। सुजाता का पति दिव्यनाथ उसे केवल भोग और आनन्द का साधन मात्र समझता है और जब वह गर्भवती हो जाती है तो दिव्यनाथ अपने पतिकर्म का निर्वाह न कर पलायनवादी प्रवृत्ति अपनाता है। दिव्यनाथ की माँ और सुजाता की सास भी सुजाता के बार-बार माँ बनने पर नाराज होती है लेकिन इसमें वह अपने पुत्र का कोई दोष नहीं समझती।

'1084वें की माँ' का कथा फलक चार खण्डों कमशः सुबह, दोपहर, शाम और रात में बांटा गया है। कथा कई बार फ्लेशबैक में ही चलती है और पुरानी घटनाओं और प्रसंगों का उभार लेकर नयी दशाओं से उसका जुड़ाव होकर एक अलग प्रकार की दशा का निर्माण करता जाता है। सुजाता का प्रसव दर्द, दिव्यनाथ की लापरवाही, व्रती का जन्म.... ...कुछ समय बाद सुजाता का फिर से बैंक जाना व्रती से पहले जन्मी सन्तानों ज्योति, नीया, तुली से सहज होकर बोलना उसकी कहानी इसके बाद बच्चों के बड़े होने को दिखाती है ज्योति और दूसरी सन्तानों-व्रती को छोड़कर की युवा जीवन शैली दिव्यनाथ से सुजाता की खिन्नता और अलगाव, दिव्यनाथ द्वारा व्रती की मौत के सहज कारण को दबाने का प्रयास.....व्रती के निशानों को घर और दिल से मिटाने की दिव्यनाथ की कोशिश.....सुजाता का अपनी ही जीवन शैली को सही समझकर उसी के अनुरूप चलन बैंक में नौकरी करना.....व्रती की मौत और उसके बाद केहालात पर सुजाता के मन का अन्तर्द्वन्द... .....ती का क्षत-विक्षत लाश का दृश्य बार-बार सुजाता को याद आना..... नौकर भीखन से सुजाता द्वारा अपने दर्द और व्रती की मौत के अवसाद का अपुष्ट जिक्र और सुजाता की दिनचर्चा ...डरपोक और दब्बूपना व्रती का व्यवहार याद आनव्रती का सीधापन..... काव्यात्मक अभिव्यक्ति.. ...दिव्यनाथ द्वारा व्रती की मौत के लिए सुजाता को कोसन सुजाता द्वारा मन ही मन व्रती की मौत के अनेक कारणों के अन्तर्द्वन्द्व ग्रसित पड़ताल करना, समसामयिक परिस्थितियों और राजनैतिक-सामाजिक कारणों पर मंथन करना आदि का चित्रण ..नौकरानी हेम और सुजाता के बीच व्रती को लेकर बातचीतव्रती की प्रेमिका नन्दिनी का जिक्र. ..सुजाता की ऐपेन्डिक्स की बीमारी का जिक्र सुजाता का व्रती के स्वप्निल और उच्चतर आचरण पर गर्व करना, अतीत के दर्द के अनेक उल्टा सुजाता के मन में जमा होना और सुजाता द्वारा व्रती नाम की कलम और यादों की स्याही से उसे रेखांकित करते हुए पढ़ना आदि प्रसंग 'सुबह' नामक खण्ड में प्रस्तुत हुए हैं।

दोपहर नामक खण्ड में भी विशिष्ट प्रसंग उभरे हैं। अवैध बस्तियों और गरीबों का जिक्र, राजनेताओं की स्वार्थपरता, सुजाता का कच्ची बस्ती में जाकर व्रती के साथ शहीद हुए समु की गरीब माँ से मिलना, समु की माँ का विलाप, देशज बातचीत, समु और व्रती की मौत को याद करके भावुक होना और दहाड़े मारकर रोना, समु के मरे हुए पिता का जिक्र, समु की बहन के क्रोध और खा जाने वाली खामोशी का चित्रण, सुजाता, समु की माँ के कहे और समु की बहन के अनेकहे दर्द के सैलाब का प्रकटीकरण, व्रती और समु की मौत के हालात पर चर्चा, नंदिनी और व्रती के

परस्पर साथ गुजरे पलों का चित्रण, व्रती के पिता दिव्यनाथ की आन्तरिक अभ्रद्रता और बाहरी संभ्रान्तता का चित्रण, बच्चों पर भावनात्मक अधिकार को लेकर सुजाता और दिव्यनाथ का अनबोला संघर्ष, 60 और 70 के दशक में कलकत्ता के समाज और राजनीति के दृश्यों की प्रस्तुति, बुद्धिजीवियों और लेखकों, कलाकारों-साहित्यकारोंके दोगलेपन पर सुजाता द्वारा मन ही मन सवाल उठाना, व्रती की मौत और उस समय लोगों की क्रूरता का चित्रण।

सुजाता द्वारा समु की माँ को आर्थिक सहायता का प्रयास, दिलासा देना, व्रती के अन्य मित्र ललटू की शहादत का जिक्र, व्रती और समु की मौत के बाद के हालात पर दार्शनिक और भावनात्मक विश्लेषणपरक प्रस्तुति जैसे - "मानसिक चोट और शोक ने इन दोनों (समु की माँ और सुजाता) को कांटा पुकूर के मुरदाघर और श्मशान में एक कर दिया था, लेकिन वह साम्य हमेशा स्थायी रहने वाला नहीं था। शोक से भी बलवान है समय। शोक तट है तो समय सदा प्रवाहित होने वाली गंगा। समय शोक पर बार-बार मिट्टी की परत चढ़ाता जाती है"।' नक्सलवादी समस्या का भावनापूर्ण चित्रण और उसके प्रति समर्थनपरक अभिव्यक्ति, राजनेताओं और समाजसेवकों के दोगलेपन पर सुजाता की खिन्नता, समु की मौत के बाद पुलिस वालों का नीच व्यवहार, सुजाता को समाज के प्रति गहन विश्लेषणात्मक सोच, समु से सुजाता का अंतिम बार मिलना और उसे दर्द के भंवर में छोड़कर खुद के 'वैसे ही' लौटने पर सुजाता का घनीभूत अवसाद आदि की प्रस्तुति दोपहर नामक खण्ड में हुई है।

नन्दिनी के घर पर सुजाता का मिलने जाना। नंदिनी द्वारा सुजाता को व्रती की मौत के जिम्मेदार गद्दार लोगों का नाम बताना, नन्दिनी द्वारा व्रती के साथ अपने भावनात्क और प्रेमिल संबंधों की स्वीकारोक्ति, नन्दिनी द्वारा वामपंथी विचारधारा और उसके वर्तमान तथा भविष्य की दशा-दिशा को लेकर सुजाता से वार्तालाप, मीडिया और राजनीति के कुत्सित घालमेल पर नन्दिनी का कुपित होना, व्रती की मौत के जिम्मेदार लोगों की पहचान कर उन्हें सजा दिलवाने का प्रण लेना, नन्दिनी द्वारा सुजाता की विचारधारा और अन्तिम दिनों में की गई बातें और क्रियाकलापों को

बताना, नन्दिनी की पीडा और अकेलेपन के अवसाद को सुजाता द्वारा समझने की कोशिश आदि का जिक्र 'शाम' नामक खण्ड में हुआ है।

'रात' नामक खण्ड उपन्यास का अंतिम खण्ड है। दिव्यनाथ और टाइपिस्ट लड़की के अवैध संबंध, व्रती के बचपन की यादें, उसका पढ़ाई में तेज होन..... कुछ दिनों के बाद दिव्यनाथ आदि लोगों द्वारा पार्टी में भोंडेपन से अपने अभिजात्य जीवन शैली की शैखी बघारना, कई लोगों के परस्पर संबंधों की गलीज और सड़ी हुई हकीकत का सामने आना, अनेक लोगों द्वारा अपने अवैध संबंधों की गर्वपूर्ण स्वीकारोक्ति, सुजाता का इस प्रकार के माहौल से ऊबना और उसे घुटन - सी होना। दिव्यनाथ के बिगडैल बच्चों द्वारा दिव्यनाथ की बेजा, गलत और गंदी हरकतों का भी समर्थन करना, सुजाता का दुःखी होना। सुजाता के अन्तर्मन में व्रती के दुःख-दर्द और उसे दी गयी यातनाओं का केनवास उभरता है।

सुजाता सोचती है कि समाज और लोगों को किसी की मौत से क्या फर्क पड़ता है, भले ही वह मरने वाला समाज के भले के लिए ही क्यों न मरा हो। माताओं के दर्द को समझने की, अनुभूत करने की सुजाता की कोशिश दम तोड़ती जाती है.....सुजाता की बेटी और पार्टी में आए अन्य लोग भद्देपन और थोथेपन से भरी अनैतिक कुत्साओं के प्रतिरूप दिखाई देते हैं। सुजाता आज की इस पीढ़ी की बेहयाई पर कसमसा कर रह जाती है, उसे लगता है कि व्रती का जाना कदाचित ठीक ही था क्योंकि वो ऐसी 'आधुनिक' दुनिया और इतने 'फोरवर्ड' लोगों में मिसफिट

थ..... ये लोग लगातार ऐसे ही बेशर्मी दिखाते रहेंगे, कई व्रती इस तरह जन्म लेंगे ऐसे गन्दे समाज और पतित व्यवस्था को सुधारने के लिए संघर्ष करेंगे. लेकिन यह समाज व्रती जैसे संघर्षशील और सच्चे लोगों को ही लील जाता है और उनके भले कार्यों को भी दुष्प्रचारित कर व्रती जैसी मृत आत्माओं का अपमान करता है।
सुजाता का आत्मसंघर्ष समाज और बिगडैल परिवारजनों से उसकी विरक्ति, आकाश के बादलों में से कहीं झांकता व्रती का चेहरा सुजाता इन सब कारणों से लोक छोड़ जाती है, परलोक में प्रवेश लेती है। वास्तव में यह उपन्यास दर्द के सैलाब और राजनैतिक सामाजिक समस्याओं एवं युवाओं के भोलेपन और जुझारूपन की मिली-जुली प्रस्तुति है। हमारा समाज न जाने ऐसे कितने व्रतियों को मारे जा रहा है, कितनी सुजाताएँ अपने पुत्रों के वियोग में दर्द और अवसाद की नदी में तैरती हैं, कितने दिव्यनाथ व्रती जैसे पुत्रों और सुजाता जैसी पत्नियों के मन पर बाहर से दहाड़े मारकर रोते हैं और अन्दर ही अन्दर पुलकित होते हैं' 1084 वें की माँ' का कथा पुलक इन सारी स्थितियां से, समाज व्यवस्था और राजनैतिक तंत्र के कटे-फटे और बदबूदार यथार्थ से हमें अवगत करवाता है।

इस उपन्यास में महाश्वेताजी ने आजादी से प्राप्त होने वाली समानता न्याय, समृद्धि के सपनों से हुए मोहभंग और उसकी तीव्रतम अभिव्यक्ति नक्सलवादी आन्दोलन को आधार बनाकर मध्यमवर्गीय चेतना को झकझोरने वाले कालखण्ड को समेटा है। वंचितों और शोषितों की लेखिका के इस करूणार्द्र उपन्यास पर गोविन्द निहलानी फिल्म भी बना चुके हैं। इस उपन्यास में उभरी संवेदनाएं, विचारधारा एवं प्रयोजन समाज संदेश का कार्य करते हैं। महाश्वेता जी ने इस उपन्यास में भ्रष्टाचार, आतंक, वोटों की राजनीति, बेईमानी, अनैतिकता, हत्या, लूटपाट, बेगुनाहों का शोषण, अराजकता, अनाधिकृत मिलावट, सुविधावादी व अवसरवादी मनुष्य, गुण्डागर्दी, मुनाफाखोरी, आर्थिक असमानता इत्यादि विसंगतिपूर्ण अवमूल्यों, समस्याओं, आपदाओं का विरोध करवाया, क्योंकि भारतीय समाज में इस व्यवस्था के नाम पर रखी गयी।

इस व्यवस्था की नींव पर असमानता और अराजकता का साम्राज्य ही खड़ा हुआ, जिसे मिटाने के लिए मिटाने वाले मिट गये। जैसे- "इस समाज में बड़े-बड़े हत्यारे हैं, जो खाने की चीजो में, दवाईयों में, बेबी फूड में मिलावट करते हैं, वे जिन्दा रह

सकते हैं। इस समाज में नेता लोग निहत्थे गाँव वालों को पुलिस की गोली के सामने धकेलकर खुद मकान गाडी समेत पुलिस के पहरे में बेखटके निडर होकर जिन्दा रह सकते हैं। लेकिन व्रत बड़ा अपराधी है, क्योंकि उसने विश्वास खो दिया था। इस मुनाफाखोर, स्वार्थान्ध व्यवसायी समाज और उनके नेताओं का विश्वास खो दिया था।" लेखिका इन सब का उपाय और समाधान बताते हुए लिखती हैं-"छाती के बल पर जमीन पर रेंगने वाले हवा पानी का बदलता हुआ रूख देखकर मत बदल देने वाले, सुविधावादी कलाकार, साहित्यिक, बुद्धिजीवियों के इस समाज का जो लोग घृणित समझते हैं, उन सब लोगों की सजा निश्चित मौत है।" अर्थात् लेखिका का मंतव्य है कि जनतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करते हुए इन्हें शीघ्र दूर नहीं किया गया तो चतुर्दिक अराजकता और आतंक का साम्राज्य निश्चित नहीं होगा। महाश्वेतादेवी ने '1084वें की माँ' में स्वतन्त्रता के पश्चात् नगरीकरण और उसमें उत्पन्न होती बसावट की असुविधा, विकास का अभाव, सुविधाओं की कमी को भी परोक्ष रूप में रेखांकित किया है।

शहरीकरण की बढ़ती प्रवृति ने शहरों में षडयन्त्र, अपराध, गैंगवार, अर्द्धजीवित ज्ञान, विश्रृंखलता, चोरबाजारी, सिनेमा और अश्लीलता को खुले आम बढ़ावा दिया है। जनसंख्या तो बढ़ी लेकिन स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, सुरक्षा आदि की स्थिति जस की तस है। उपजाऊ भूमि नई कॉलोनियों में तब्दील होती जा रही है। लेखिका लिखती है-

"1947 के बाद बढ़ती आबादी के दबाव में इस इलाके का नक्शा ही बदल गया। मैदान, दलदल, नारियल के बाग, धान के खेत, गाँव सब कुछ को जैसे निगलकर यह कॉलोनी देखते-देखते बढ़ उठी।"

दलीय राजनीति के कारण भी आज विकास अवरूद्ध है- "इस इलाके से हमेशा विरोधी दल को ही वोट मिले हैं, शायद इसीलिए सरकार ने यहाँ पक्की सड़क, स्वास्थ्य केन्द्र काफी संख्या में हैडपम्प बस रूट इन सबका कोई भी बन्दोबस्त नहीं किया।"'

इन अव्यवस्थाओं के बीच व्यवस्था की माँग करने वाले का गला दबा दिया जाता, शांति की जगह अशांति स्थापित हो जाती है, रिक्शे वाला सिर पर पैर रखकर भागता है, राहगीर कुत्तों की तरह भागते हैं, अचानक बम फट जाते हैं और पुलिस की वैन के पीछे-पीछे काली गाड़ी आकर मरे हुओं को भरकर ले जाती है। इस अन्याय और अत्याचार का चित्रण लेखिका ने वैसे तो शहरीकरण के परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण उपन्यास में किया है, लेकिन दोपहर के प्रारम्भिक दो पृष्ठ विशेष संत्रास भरे बन पड़े हैं। जैसे 'सुखी, शान्ति प्रिय परिवार फिर लौट आए हैं।

आजकल सिर्फ दिखाई देती है- चावल की बेरोकटोक चोर बाजारी, दिनरात सिनेमा के विज्ञापन और नर रूपी देवता के मंदिरों के सामने मुक्तिकामी जनता की पगलाई भीड़। कल के हत्यारे आज चोला बदलकर नये चेहरे लगा निडर होकर घूमते फिरते हैं।"2

'1084वें की माँ' उपन्यास जनता के अधिकार और पुलिसिया अत्याचार के द्वन्द्व की कहानी कहता समकालीन ज्वलन्त दस्तावेज है, अधिकारों के प्रति सचेत होने वाले युवाओं को पुलिस अपना अधिकार समझकर निर्ममतापूर्वक खदेड़ देती है। प्रत्येक दुःखान्तिका के बाद सब कुछ सहज हो जाता है और इसी बात से सुजाता दुःखी है-"यह सहज स्वाभाविकता कितनी भयंकर पाश्विक हो सकती है.....व्रती जैसे लोग

जेल में सड़ रहे हैं, रास्ते पर दम तोड़ रहे हैं, काली गाड़ियों / गाड़ी में लादे-खदेड़े जा रहे हैं, हिंसक जनता के हाथों मारे जा रहे हैं, लेकिन पूरे राष्ट्र की नीति और विवेक के समान जो लोग हैं, से सब चुप्पीसाधे हुए हैं, यह एक ही विषय है, जिस पर बोलते समय सबकी जुबान पर ताला पड़ जाता है।"

आज जेलों में स्वार्थी राजनेताओं के चम्मचे सामान्य जनता को धोखा दे रहे हैं। जनजागृति के लिये हमें हजारों - हजार पत्रिका निकालनी होगी। लक्ष्य के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होना होगा, स्वार्थ को त्यागना होगा। नन्दिनी द्वारा सुजाता को कहे गए शब्द हमें सोचने को बाध्य करते हैं- "हजारों लड़के बिना मुकदमें के न्याय की जेलों में सड़ रहे हैं, फिर भी आप कहती हैं कि सब शान्त है।" वास्तव में कांटा पुकूर जेल आज के अनके युवाओं के लिये अत्याचारों, शोषण और बेगुनाहों की गुनाह जेल बनकर रह गयी है और वह भी पुलिस की सुरक्षा में।

'1084वें की माँ' उपन्यास राजनीति, राजनेता और पुलिस की अनीति व अंधेर नगरी चौपट राजा' को ही चरितार्थ नहीं करता अपितु हमे आधुनिक विकास, भावात्मक एकता, भाषिक, धार्मिक, जातीय एकता के नवीन विचार प्रदान करता है। भारत के नवीन उत्थान में नकारात्मक सोच की बजाय हमें नूतन सकारात्मक दृष्टिकोण से सोचना होगा और लोगों में उत्साह का संचार करना होगा।

वस्तुतः इस उपन्यास में सुजाता, व्रती, नन्दिनी, समु की माँ आदि जैसे पात्रों के द्वारा लेखिका ने स्वातंत्र्योत्तर विशेषकर सत्तर के दशक में जन्मी मुक्ति की भावना को व्यवस्था, ईमानदारी, निष्ठा, नैतिकता, विश्वास, समानता, प्रेम, सहानुभूति इत्यादि मानवीय भावनाओं को स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया है।

समकालीन समाज में पहले भ्रष्टाचार आतंक, अराजकता, हत्या, लूटपाट, युवा आक्रोश, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी पुलिस का अत्याचार व निर्ममता इत्यादि को लेखिका ने व्रती, नन्दिनी, समु, सुजाता के विचारों से उखाड़ फेंकने की सफल चेष्टा की है, जिसमें भले ही व्रती, समु, नन्दिनी असफल हो रहे हों, अकाल मौत के ग्रास बने हों या जिन्दा रहकर लाश बन गये हो, किन्तु जातीय, भाषीय, धार्मिक एकता के प्रतिपादन से उनके सपने को 'मुक्तिदशक' के रूप में साकार किया जा सकता है। इस सपने को पूरा करने में अनेक व्रती मौत के गर्त में जा सकते हैं और सुजाता जैसी अनेक माताओं का अंतहीन पहाड़ जैसा दर्द भूमिगत नालियों की तरह अन्दर होकर बह सकता है। व्रतियों की शहादत, सुजाताओं का आन्तरिक क्रंदन किसे सुनाई देता .....संघर्ष करने वाले करते हैं, उसका फायदा किसी और को मिलता है और फायदा लेने वाले लोग व्रती जैसे लोगों की यादों को भी अपने जीवन से इस तरह निकाल देते हैं जैसे दूध में से मक्खी को निकालकर फेंक दिया जाता है। सुजाता जैसी माताओं का करूण विलाप, भावनाओं की झारियों से झांकती हसरते व्रतियों को ढूंढती है-" धरती की सब कविता, कविता के बिंब, लाल गुलाब के गुच्छे, हरी घास, नियॉन की रोशनी, माँ के चेहरे पर फैली हंसी, शिशु का क्रंदन.... हमेशा, अनंत काल तक इन सबका भोग करती रहेगी ये लाशें। अपने सड़े गले गंधाते अस्तित्व को लिए धरती के हर सौन्दर्य और माधुर्य को हथियाएँ रहेंगी, क्या इसीलिए व्रती मर गया ? सिर्फ इसलिए ? धरती को, पृथ्वी को इन लोगों के हवाले कर उनके ही हाथों में सौंपने के लिए क्या उसने अपनी जान दे दी? नहीं, कभी नहीं, व्रती ई.ई... सुजाता की लंबी, दिल दहला देने वाली चीख, उसका आर्तविलाप एक विस्फोट की तरह यह प्रश्न फूटकर बिखर गया कलकत्ता के हर घर में, शहर की नीवों में धंस गया, आकाश के शून्य में मिल गया, हवा के साथ प्रदेश के कोने-कोने में फैल गया। इतिहास के साक्षी खण्डहरों के अंधेरे, इतिहास के परे पुराणों के विश्वास की नीवें कांप गई। भूला हुआ, न भूला हुआ अतीत, वर्तमान, आगामी काल-सब कुछ जैसे यह क्रन्दन सुनकर कांप गए। हर सुखी-सुखी दिखने वाले अस्तित्व के सुख तार-तार हो गए।"'

बेटो का शोक मनाने वाली, समाज की समस्याओं, अव्यवस्था और गरीवी पर दुःख प्रकट करने वाली सुजाताओं को अन्त में मरना ही पड़ता है और समाज को उनकी मौत से कोई सरोकार नहीं होता। कथा फलक के आधार पर विश्लेषण किया जाए तो '1084 में की माँ' एक उत्कृष्ट उपन्यास सिद्ध होता है जिसका प्रभाव पाठकों पर सटीक रूप से पड़ता है। यह उपन्यास राष्ट्रीय स्तर की समस्या विशेषकर अतिवाद की जड़ में जाकर उसके मानवीय पहलूओं के आधार पर निराकरण की बात भी पेश करता है। युवाओं के भटकाव, भ्रम और उलझनों को भी इस उपन्यास में पर्याप्त अभिव्यक्ति मिली है।

संदर्भ:

1. 1084वें की माँ' महाश्वेता देवी पृष्ठ सं. 72
2. वही, पृष्ठ सं. 100
3. 1084वें की माँ' - महाश्वेता देवी पृष्ठ सं. 45
4. वही, पृष्ठ सं. 46
5. 1084वें की माँ' महाश्वेता देवी पृष्ठ सं. - 29

6. वही, पृष्ठ सं.- 29
7. 1084वें की माँ' - महाश्वेता देवी, पृष्ठ सं.- 73